पंच परमेश्वर

प्रेमचंद

चित्राँकन
अतनु रॉय

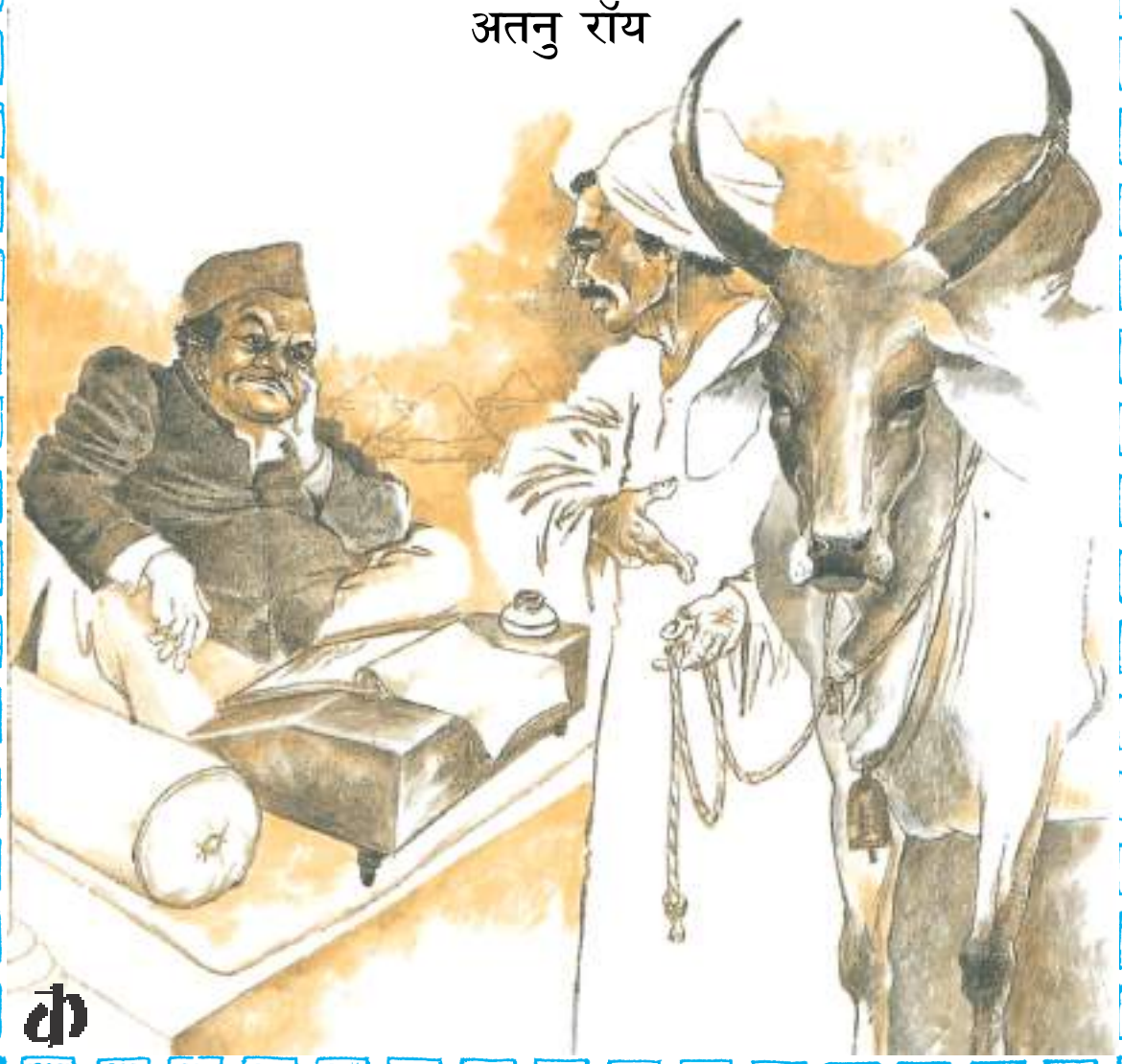

प्रेमचंद

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था। इनका जन्म वाराणसी के निकट लम्ही में हुआ था। प्रेमचंद ने कुछ दिनों तक शिक्षा-विभाग में पहले अध्यापक, और फिर सब-डिप्टी इंस्पेक्टर की नौकरी की। परंतु 1920 के बाद उन्होंने अपना पूरा समय हिन्दी पत्रिकाओं के संपादन और कहानी व लेख लिखने में बिताया।

अपने काल में हो रहे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन ही उनकी कहानियों का आधार बने। जहाँ एक तरफ़ उनकी कहानियों में गाँव के लोगों का रहन-सहन, उनकी परेशानियाँ और उनके छोटे-बड़े सुख और दुःख की झलक मिलती है वहीं दूसरी तरफ़, ज़िंदगी की जटिलता से जूझते हुए नगर-वासियों का सही चित्राँकन मिलता है।

KATHA

पहला संस्करण 1998, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2011, छठवाँ संस्करण 2013
कृति स्वामित्व © कथा, 1997

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-85586-64-9

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग,
नई दिल्ली–110017

दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511, फैक्सः 2651 4373

ई मेलः marketing@katha.org . kathakaar@katha.org

इंटरनेट : http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

पंच परमेश्वर

लेखक
प्रेमचंद

चित्राँकन
अतनु रॉय

(मूल कहानी का रूपांतर)

कथा, नई दिल्ली

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी बचपन से दोस्त थे। दोनों को एक-दूसरे पर पूरा भरोसा था।

वे साथ खाते-पीते नहीं थे। धर्म भी अलग थे। केवल विचार मिलते थे। यही उनकी मित्रता का आधार था।

जुम्मन की एक बूढ़ी ख़ाला (मौसी) थी। उनके पास थोड़ी ज़मीन-जायदाद थी। जुम्मन ने उन्हें फुसलाकर जायदाद अपने नाम लिखवा ली।

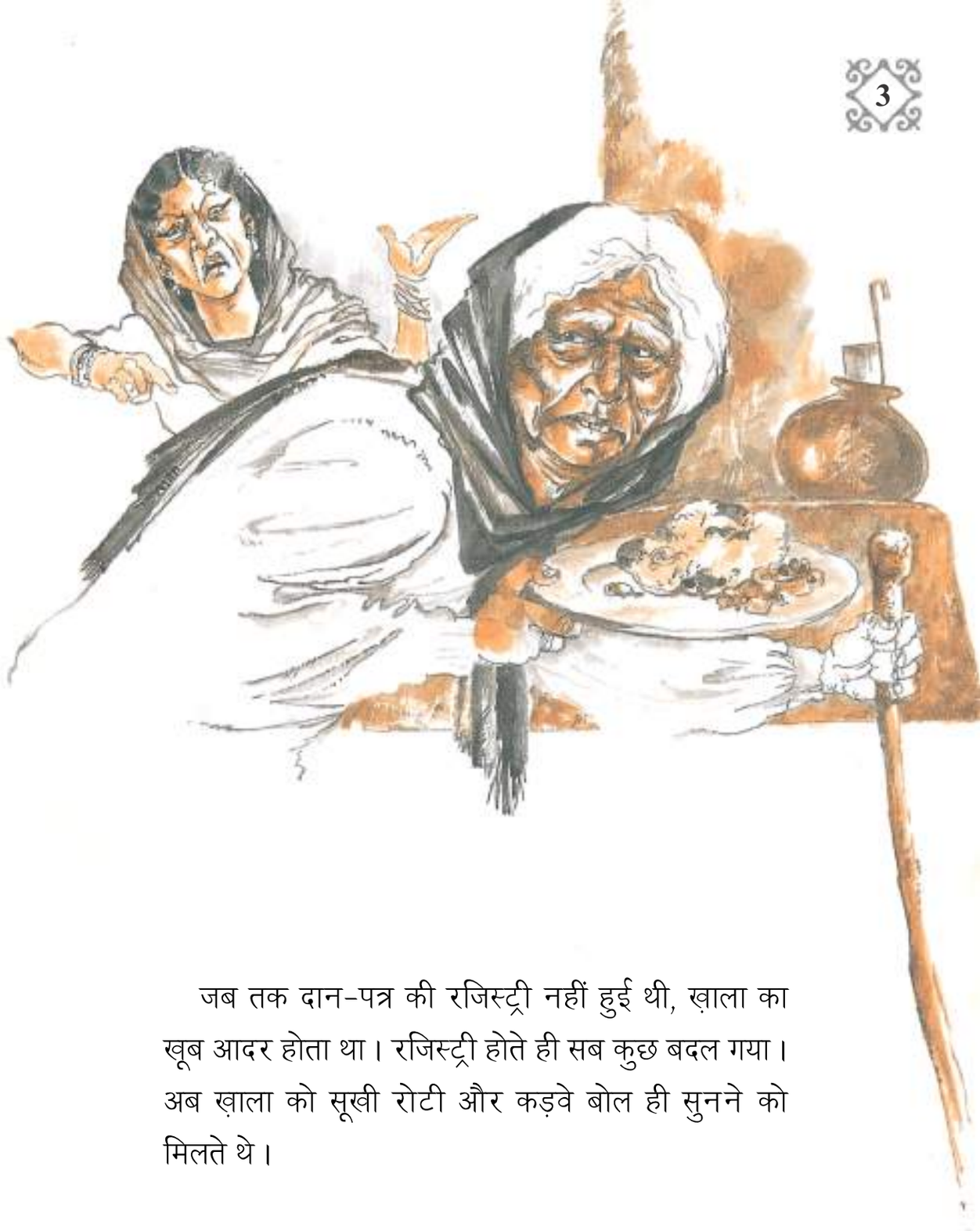

जब तक दान-पत्र की रजिस्ट्री नहीं हुई थी, ख़ाला का खूब आदर होता था। रजिस्ट्री होते ही सब कुछ बदल गया। अब ख़ाला को सूखी रोटी और कड़वे बोल ही सुनने को मिलते थे।

कुछ दिन तक ख़ालाजान ने सुना और सहा। जब और न सह सकीं तो जुम्मन से बोलीं, "बेटा! मुझे हर महीने कुछ रुपये दे दिया कर। मैं अलग खा-पका लूँगी।"

जुम्मन ने रुपये देने से मना कर दिया। इस पर ख़ाला बिगड़ गईं। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। पढ़ा-लिखा होने के कारण जुम्मन का बहुत मान था। वह जानता था कि जीत उसी की होगी। हँस कर बोला, "ज़रूर करो।"

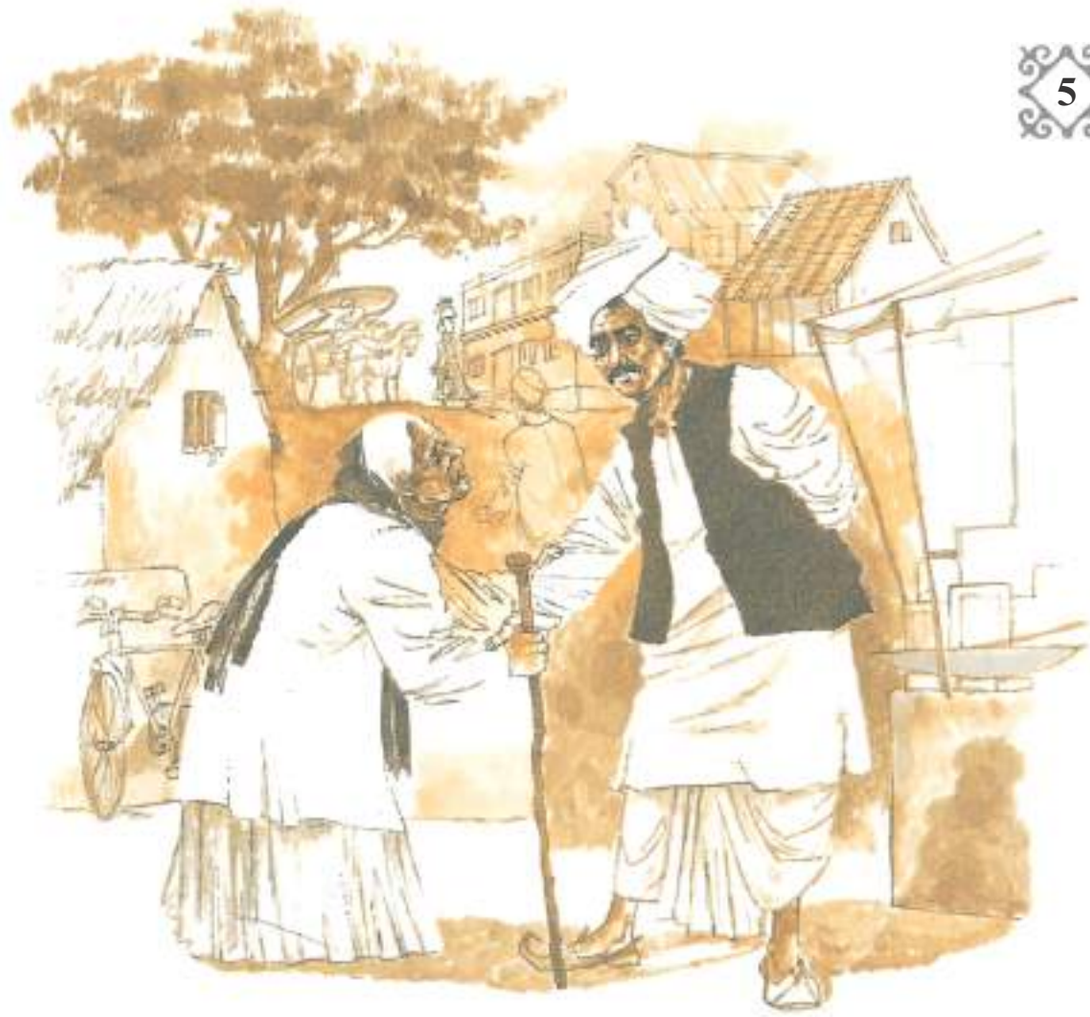

कई दिनों तक बूढ़ी ख़ाला, हाथ में लकड़ी लिए घर-घर घूमीं। सब लोगों से पंचायत में आने के लिए कहा। किसी ने हाँ-हूँ करके टाल दिया तो किसी ने उल्टे उन्हें ही गालियाँ दीं।

चारों ओर से घूमघाम कर बेचारी अलगू चौधरी के पास आईं। अलगू से भी पंचायत में आने के लिए कहा।

अलगू बोला, "आ तो जाऊँगा पर मुँह न खोलूँगा। जुम्मन से मेरी पुरानी दोस्ती है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।" इस पर ख़ाला बोलीं, "बेटा! क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?" ख़ाला चली गईं पर अलगू बहुत देर तक यही बात सोचता रहा।

शाम के समय पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। ख़ाला ने पंचों के आगे जायदाद का मामला रखा और न्याय माँगा। वे पंच का फैसला मानने को तैयार थीं।

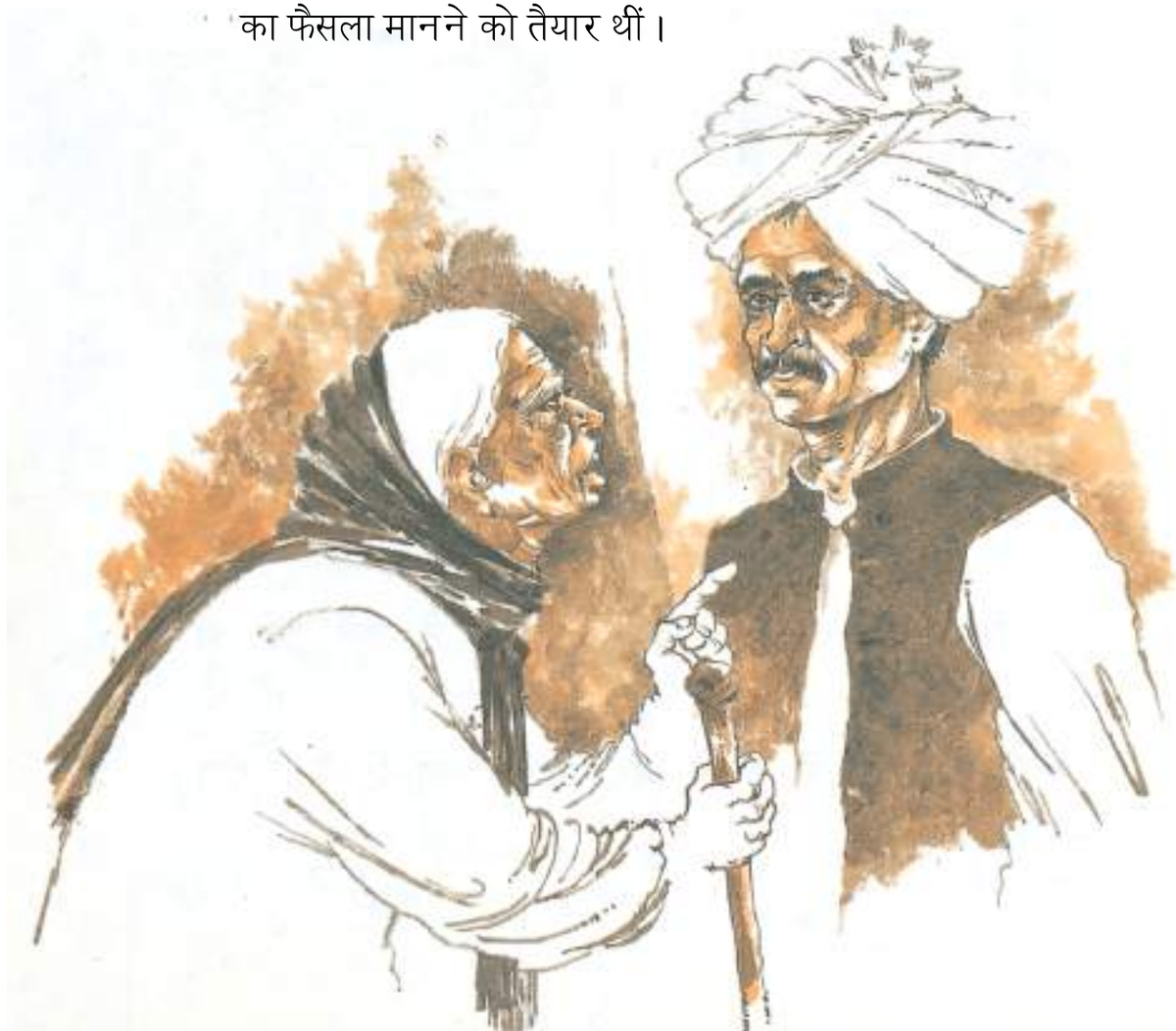

फिर सरपंच बनाने की बारी आई। पूछने पर जुम्मन बोला, "ख़ाला जिसे चाहें उसे बनायें। मैं भी पंच का फैसला मानने को तैयार हूँ।" तब ख़ाला ने अलगू को सरपंच बनाया।

जुम्मन खुश हो गया। अब तो जीत उसकी ही होनी थी। पर अलगू कतराने लगा। तब ख़ाला बोलीं, "बेटा! दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न दुश्मन। पंच के दिल में खुदा बसता है। उनके मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है।"

अलगू चौधरी सरपंच हुआ। ख़ाला और जुम्मन, अब उसके लिए, एक समान थे।

अब जुम्मन ने अपनी बात पंचों से कही, "ख़ाला की जायदाद से मुझे ज़्यादा फ़ायदा नहीं होता। इसलिए मैं उन्हें हर महीने खर्च नहीं दे सकता। फिर इस तरह की कोई लिखा-पढ़ी भी तो नहीं हुई थी।"

इस बात पर अलगू, जुम्मन से सवाल-जवाब करने लगा। जुम्मन हैरान था।

फिर अलगू ने फ़ैसला सुनाया, "ख़ाला को खर्च देने लायक लाभ तो जायदाद से हो ही जाता है। अगर जुम्मन खर्च नहीं देगा तो दान-पत्र की रजिस्ट्री रद्द कर दी जायेगी।"

फ़ैसला सुनकर जुम्मन दंग रह गया। "क्या यही कलियुग की दोस्ती है? जिस पर भरोसा था उसी ने समय पड़ने पर धोखा दिया!"

सब लोग अलगू की सच्चाई की तारीफ़ करने लगे। "इसी का नाम पंचायत है। दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया।"

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन को दुश्मन बना दिया। सच के एक झोंके ने दोस्ती की जड़ हिला दी।

जुम्मन हर समय बदला लेने की सोचने लगा। शीघ्र ही उसे, यह अवसर मिला।

पिछले साल अलगू मेले से बड़े-बड़े सींगों वाले एक जोड़ी बैल खरीद लाया था। पंचायत के एक महीने बाद ही एक बैल मर गया। अब एक बैल से क्या होता? सो अलगू ने उसे गाँव के बनिए समझू साहू को बेच दिया। साहू ने डेढ़ सौ रुपये में बैल खरीद लिया। एक महीने बाद दाम चुकाने की बात हुई।

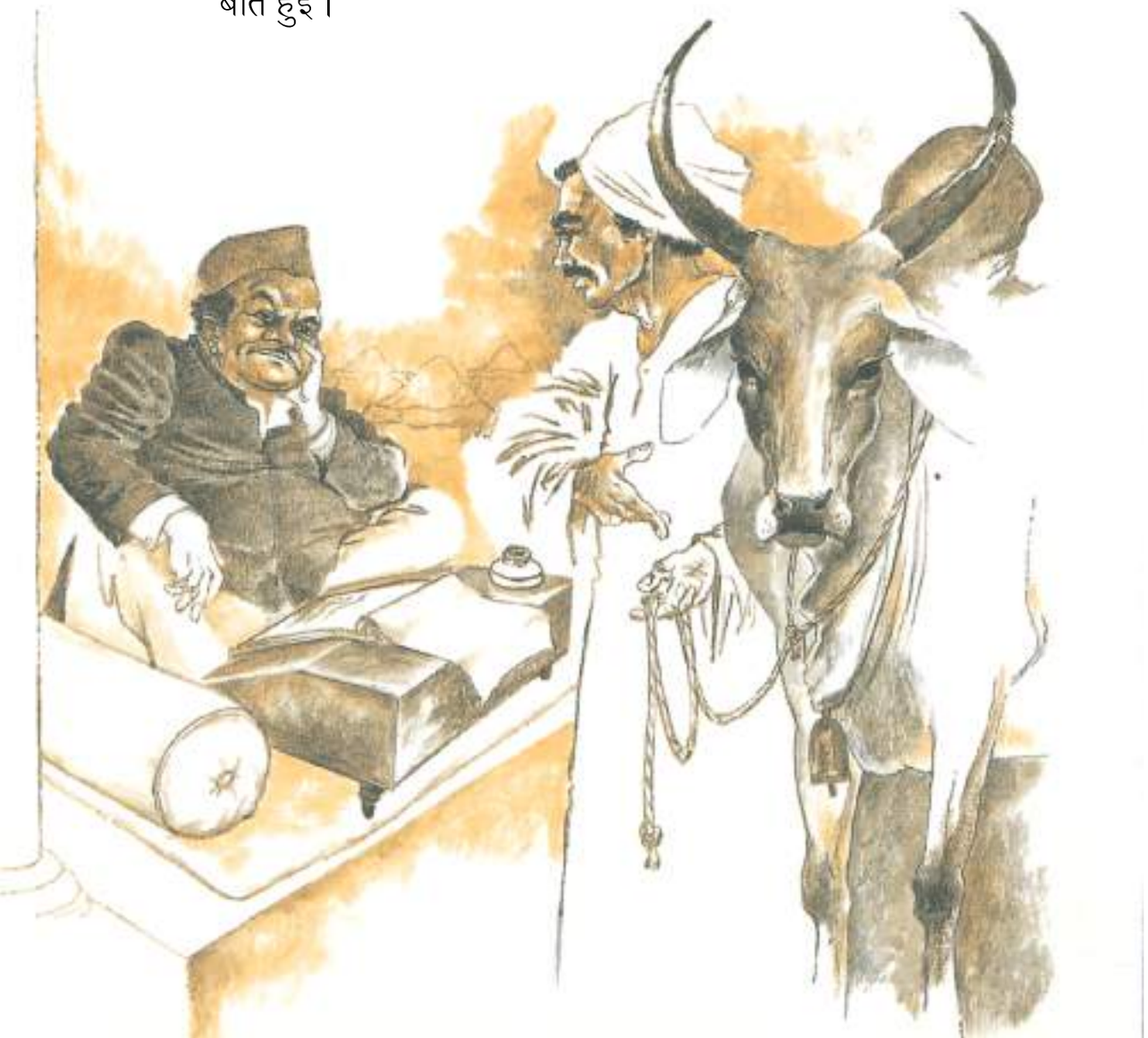

समझू साहू गाँव से गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते थे। फिर मंडी से तेल, नमक लाकर गाँव में बेचते थे। नया बैल पाया तो दिन में तीन-चार चक्कर लगाने लगे। पशु के साथ पशु-सा बर्ताव किया। न ठीक से चारा दिया, न पानी ही। आखिर एक दिन, कोड़े की मार खाते-खाते बैल जो गिरा, फिर कभी न उठा।

कई महीने बाद अलगू बैल के दाम माँगने गया। समझू साहू और उसकी पत्नी ने उसे बहुत डाँटा। "मरा-सा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चला है। यहाँ तो जन्म-भर की कमाई लुट गई।"

अलगू डेढ़ सौ रुपये गंवाना नहीं चाहता था। लोगों ने उसे पंचायत करने को कहा। वह मान गया।

पंचायत की तैयारियाँ हुईं। तीसरे दिन शाम को उसी पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। समझू साहू ने जुम्मन शेख को सरपंच बनाया। अलगू निराश हो गया। पर कुछ बोला नहीं।

सरपंच बनते ही जुम्मन में ज़िम्मेदारी आ गई। वह न्याय और धर्म के आसन पर बैठा था। यह समय निजी बदला लेने का नहीं था। उसे केवल सच ही बोलना चाहिए।

पंचों ने समझू साहू और अलगू चौधरी से सवाल-जवाब किया। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया, "जब बैल खरीदा गया था तब वह बीमार नहीं था। समझू साहू की लापरवाही और अत्याचार के कारण ही वह मारा गया। समझू साहू अलगू चौधरी को बैल के पूरे दाम दें। अलगू चाहें तो दाम कुछ कम कर सकते हैं।"

अलगू खुशी से झूम गया। उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से बोला, "पंच परमेश्वर की जय।"

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आया। गले लिपटकर बोला, "आज पता चला है कि पंच न किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। पंच में तो परमेश्वर वास करते हैं।"

अलगू रोने लगा। दिल का मैल धुल चला था। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

शब्दों के अर्थ

नीचे दिए गए शब्द इसी कहानी से लिए गए हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ भी दिए गए हैं। इन्हें अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

जायदाद	संपत्ति
रजिस्ट्री	पंजीकरण
अवसर	मौका
तारीफ़	प्रशंसा
भरोसा	यकीन
फायदा	लाभ
खुदा	ईश्वर
ज़िम्मेदारी	फर्ज़

आओ सीखें

यहाँ इस किताब में प्रयुक्त किए गए कुछ ऐसे शब्द दिए गए हैं जो **जुड़वे-शब्द** कहलाते हैं। ये शब्द दो अर्थपूर्ण शब्दों के जोड़ से बनते हैं।

इन शब्दों को अगर अलग कर दिया जाए तो ये दो शब्द हो जाते हैं। और अगर मिला दिया जाए तो ये किसी भाव-विशेष को और अधिक बलपूर्वक प्रकट करते हैं।

यहाँ हमने एक उदाहरण दिया है। अब नीचे दिए गए जुड़वे शब्दों को आप पूरा करें।

उदाहरण: खाते-पीते

ज़मीन-							
दान-		दान-	-पका				
	-घी		-चार	लिखा-			
पढ़ा-		सवाल-					
हाँ-							

शब्द बनायें

इस कहानी से लिए गए कुछ शब्दों को हमने पदों (मात्रा सहित अक्षरों) में विभाजित करके लिखे हैं। आप इन पदों को जोड़कर नए शब्द बना सकते हैं। जो सबसे अधिक शब्द बनाएगा, वही विजयी होगा।

याद रहे अक्षर से मात्रा अलग न हो।

आपके अंक: 5 शब्दों से कम: और अभ्यास करें

5 शब्द: बढ़िया

10 शब्द: बहुत बढ़िया

15 शब्द: वाह! वाह!

पं	क्षा	म	प	त	चा	रु	द
द्धु	द्ध	जा	रो	न	ता	ये	र
श	य	श्री	ग	य	च	त्रि	टी
भ	स्त	सा	प	ब	ज़	त्र	न
मि	यु	न	वि	दो	रो		

दोस्ती के साथ जुड़े विश्वास और समाज में ओहदे के साथ आती ज़िम्मेदारी पर आधारित, *पंच परमेश्वर* **प्रेमचंद** की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइए अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये !